पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/24-26 प्रकाशित 01.06.2025 इस अंक का मूल्य 2 रूपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868051444

दानदाताओं से अपील

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के कार्य व गतिविधियों में सहयोग करने हेतु **खाता संख्या 10205148690 स्टेट बैंक आफ इण्डिया,** घन्टाघर, दिल्ली– 110007, **आई. एफ. एस. कोड** SBIN0001280 पर सीधे भेज कर हमें फोन न. **9810117464** पर एस.एम.एस कर दें या **9868051444** पर googlepay कर दें।

–अनिल आर्य

वर्ष-42 अंक-01 ज्येष्ठ-2082 दयानन्दाब्द 201 01 जून से 15 जून 2025 (प्रथम अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.

प्रकाशित: 01.06.2025, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

8 दिवसीय विशाल आर्य युवक चरित्र निर्माण शिविर का शुभारंभ

राष्ट्र निर्माण में आर्य युवा महत्वपूर्ण भूमिका निभायेंगे –श्याम जाजू (बीजेपी नेता)

युवा पीढ़ी को चरित्रवान बनाना आर्य समाज का लक्ष्य –अनिल आर्य

शिविर उद्घाटन के मुख्य अतिथि श्री श्याम जाजू का अभिनन्दन करते अनिल आर्य, महेन्द्र भाई, प्रवीण आर्य, रामकुमार आर्य, धर्मपाल आर्य व वेद प्रकाश आर्य। द्वितीय चित्र में आर्य नेता ओम सपरा का अभिनन्दन करते श्री श्याम जाजू, अनिल आर्य, डॉ. जयेन्द्र आचार्य, महेन्द्र भाई, मेजर जर्नल आर.के.एस. भाटिया, कर्नल करण खरब व राम लुभाया महाजन

डॉ. जयेन्द्र आचार्य का अभिनन्दन करते अनिल आर्य, प्रवीण आर्य व महेन्द्र भाई। द्वितीय चित्र में श्रीमती गायत्री मीना का स्वागत करते प्रवीण आर्या, राज सरदाना, आस्था आर्या व रोशनी आर्या।

शनिवार 31 मई 2025, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में 'विशाल आर्य युवक चरित्र निर्माण शिविर' का भव्य शुभारंभ शिक्षाविद डा. अमिता चौहान व डॉ. अशोक कुमार चौहान के सान्निध्य में एमिटी इंटरनेशनल स्कूल सेक्टर 44, नोएडा में सम्पन्न हुआ ,शिविर में 200 आर्य युवक भाग ले रहे हैं। मुख्य अतिथि श्याम जाजू (वरिष्ठ भाजपा नेता) ने दीप प्रज्वालित कर तथा मेजर जनरल आर के एस भाटिया ने ध्वजारोहण कर शिविर का शुभारम्भ किया। भाजपा नेता श्याम जाजू ने कहा कि आर्य समाज का देश पर बहुत उपकार है जिन्होंने समाज निर्माण का कार्य हाथ में लिया है यह बहुत बड़ी ताकत है यह संस्कार पूरी आयु चलते हैं और ऐसे चरित्र निर्माण के शिविरों से हमारा सर्वांगीण विकास होता है।चरित्र वान युवा राष्ट्र निर्माण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभायँगे। आर्य समाज राष्ट्र की नींव मजबूत करने का सराहनीय कार्य कर रहा है। मुख्य वक्ता वैदिक विद्वान् डा.जयेंद्र आचार्य (प्राचार्य, आर्ष गुरुकुल नोएडा) ने कहा कि चरित्रवान युवा भारत का भविष्य है। उन्होंने युवाओं को मातृभाषा, मातृभूमि, देश की संस्कृति, माता–पिता और गुरु का सम्मान करने के लिए प्रेरित किया। राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि भावी युवा पीढ़ी चरित्रवान व संस्कारवान बने यही आर्य समाज का लक्ष्य है इन शिविरों से निकले युवा ईश्वर भक्त व राष्ट्र भक्त बनेंगे।परिषद निरंतर युवाओं के निर्माण में संलग्न है। आर्य नेत्री गायत्री मीना,राज सरदाना,कर्नल कर्ण खरब, राम लुभाया महाजन, आचार्य महेंद्र भाई ने संस्कारों के महत्व पर प्रकाश डाला। पूर्व मेट्रो पोलेटिन मजिस्ट्रेट ओम सपरा ने कहा कि यह शिविर चुने हुए बच्चों, युवकों का एक सुंदर गुलदस्ता है जो योग, प्राणायाम, व्यक्तित्व निर्माण और चरित्र निर्माण का आठ दिन का यह अद्भुत प्रशिक्षण प्राप्त करके, अपने व्यक्तित्व का निखार करेंगे। गायिका पिंकी आर्या एवं प्रवीण आर्य ने सुन्दर भजन प्रस्तुत किए। शिविर में 8 दिन तक युवकों को योगासन,दण्ड बैठक, लाठी, जूडो कराटे, आत्म रक्षा व साथ ही संध्या यज्ञ,भारतीय संस्कृति की जानकारी का शिक्षण दिया जायेगा जिससे वह अपनी पुरातन संस्कृति पर गर्व करना सीख सके। प्रमुख रूप से रामकुमार आर्य, सुरेश आर्य ,वेद प्रकाश आर्य ,राज सरदाना, धर्मपाल आर्य,राष्ट्रीय संगठन मंत्री सौरभ गुप्ता, त्रिलोक शास्त्री,अरुण आर्य, यज्ञवीर चौहान, सुभाष शर्मा, मंगल सिंह चौधरी , कमल आर्य, डॉ. उमेश सपरा, पतराम त्यागी ,संजीव ढाका, रोशनी आर्य , विवेक अग्निहोत्री आदि उपस्थित थे। शिविर का समापन रविवार 8 जून को होगा।

अमेठी कैम्पस नोएडा शिविर में आर्य युवक

28 मई को वीर सावरकर जयंती पर विशेष रूप से प्रचारित

वीर सावरकर ने अंग्रेजों से माफ़ी क्यों मांगी?

—डॉ. विवेक आर्य

वीर सावरकर भारत देश के महान क्रांतिकारियों में से एक थे। कांग्रेस राज की बात है। मणिशंकर अय्यर ने मुस्लिम तुष्टिकरण को बढ़ावा देने के लिए अण्डेमान स्थित सेलुलर जेल से वीर सावरकर के स्मृति चिन्हों को हटवा दिया। यहाँ तक उन्हें अंग्रेजों से माफ़ी मांगने के नाम पर गद्दार तक कहा था। भारत देश की विडंबना देखिये जिन महान क्रांतिकारियों ने अपना जीवन देश के लिए बलिदान कर दिया। उन क्रांतिकारियों के नाम पर जात—पात, प्रांतवाद, विचारधारा, राजनीतिक हित आदि के आधार पर विभाजन कर दिया गया। इस विभाजन का एक मुख्य कारण देश पर सत्ता करने वाला एक दल भी रहा। जिसने केवल गांधी—नेहरू को देश के लिए संघर्ष करने वाला प्रदर्शित किया। जिससे यह भ्रान्ति पैदा हो गई हैं कि देश को स्वतंत्रता गांधी जी/कांग्रेस ने दिलाई? वीर सावरकर भी स्वाधीनता के लिए प्राणोत्सर्ग करने वाले, सर्वस्व समर्पित करने वाले असंख्य क्रांतिकारियों, अमर हुतात्माओं में से एक थे जिनकी पूर्ण रूप से उपेक्षा की गई। वीर सावरकर ने अपनी कहानी में अंडमान की यात्राओं पर प्रकाश डालते हुए कोल्हू में बैल की तरह जुत कर तेल पेरने का बड़ा ही सजीव वर्णन किया है द्य उन्होंने लिखा है —'हमें तेल का कोल्हू चलने का काम सोंपा गया जो बेल के ही योग्य माना जाता है। जेल में सबसे कठिन काम कोल्हू चलाना ही था। सवेरे उठते ही लंगोटी पहनकर कमरे में बंद होना तथा सांय तक कोल्हू का डंडा हाथ से घुमाते रहना। कोल्हू में नारियल की गरी पड़ते ही वः इतना भारी चलने लगता की हृदय पुष्ट शरीर के व्यक्ति भी उसकी बीस फेरियां करते रोने लग जाते। राजनीतिक कैदियों का स्वास्थ्य खराब हो या भला, ये सब सख्त काम उन्हें दिए ही जाते थे। चिकित्सा शास्त्र भी इस प्रकार साम्राज्यवादियों के हाथ की कठपुतली हो गया। सवेरे दस बजे तक लगातार चक्कर लगाने से श्वास भारी हो जाता और प्रायः सभी को चक्कर आ जाता या कोई बेहोश हो जाते। दोपहर का भोजन आते ही दरवाजा खुल पड़ता, बंदी थाली भर लेता और अंदर जाता की दरवाजा बंद।

'यदि इस बीच कोई अभागा केडी चेष्टा करता की हाथ पैर धोले या बदन पर थोड़ी धूप लगा ले तो नम्बरदार का पारा चढ़ जाता। वह मा बहन की गालियाँ देनी शुरू कर देता था। हाथ धोने का पानी नहीं मिलता था, पीने के पानी के लिए तो नम्बरदार के सैंकड़ों निहार करने पड़ते थे। कोल्हू को चलाते चलाते पसीने से तर हो जाते, प्यास लग जाती। पानी मांगते तो पानी वाला पानी नहीं देता था। यदि कहीं से उसे एकाध चुटकी तम्बाकू की दे दी तो अच्छी बात होती , नहीं तो उलटी शिकायत होती की ये पानी बेकार बहाते हैं जो जेल में एक बड़ा भारी जुर्म होता। यदि किसी ने जमादार से शिकायत की तो वः गुस्से में कह उठता— 'दो कटोरी पानी देने का हुक्म है, तुम तो तीन पि गया और पानी क्या तुम्हारे बाप के यहाँ से आएगा? नहाने की तो कल्पना करना ही अपराध था हां, वर्षा हो तो भले नाहा लें। केवल पानी ही नहीं अपितु भोजन की भी वाही स्थिति थी। खाना देकर जमादार कोठरी बंद कर देता और कुछ देर में हल्ला करने लगता—'बैठो मत , शाम को तेल पूरा हो नही तो पीते जाओगे और जो सजा मिलेगी सो अलग। इसे वातावरण में बंदियों को खाना निगलना भी कठिन हो जाता। बहुत से ऐसा करते की मुंह में कौर रख लिया और कोल्हू चलाने लगे। कोल्हू पेरते पेरते, थालियों में पसीना टपकाते टपकाते, कौर को उठाकर मुंह में भरकर निगलते कोल्हू पेरते रहते। १०० में से एकाध ऐसे थे जो दिन भर कोल्हू में जुतकर तीस पौंड तेल निकाल पाते जो कोल्हू चलाते चलाते थककर हाय हाय कर दते उन पर जमादार और वार्डन की मार पड़ती द्य तेल पूरा न होने पर उपर से थप्पड़ पड़ रहे हैं, आँखों में आंसुओं की धारा बह रही है।

वीर सावरकर जानते थे कि यह अत्याचार क्रांतिकारियों पर अंग्रेजों द्वारा इसलिए किया जा रहा है ताकि वे मानसिक रूप से विक्षिप्त होकर या तो पागल हो जाये अथवा मर जाये। अंग्रेजों की छदम न्यायप्रियता का यह साक्षात उदहारण था। इतिहास फिर से दोहरा रहा था। औरंगजेब ने भी कभी अंग्रेजों के समान शिवाजी को कैद कर समाप्त करने का सोचा था ताकि शिवजी दक्कन का कभी दोबारा मुँह न देख सके। जन्मभूमि से इतनी दूर जाकर इस प्रकार से मरना वीर सावरकर को किसी भी प्रकार से स्वीकार्य नहीं था। उन्हें लगा की उनका जीवन इसी प्रकार से नष्ट हो जायेगा। मातृभूमि की सेवा वह कभी नहीं कर पाएंगे। उन्होंने साम,दाम, दंड और भेद की वही नीति अपनाई जो वीर शिवाजी ने औरंगज़ेब की कैद में अपनाई थी। उन्होंने अंग्रेजों से क्षमा मांग कर मातृभूमि जाने का प्रस्ताव उनके समक्ष रखा। अंग्रेज उनकी कूटनीति का शिकार बन गए। वीर सावरकर को सशर्त रिहा कर दिया गया। अपने निर्वासित जीवन में उन्हें न रत्नागिरी से बाहर नहीं निकलना था और न ही किसी भी प्रकार की क्रांतिकारी गतिविधि में भाग लेना था। वीर सावरकर ने अवसर का समुचित लाभ उठाया। उन्होंने अण्डेमान जेल के कैदियों के अधिकारों के लिए आंदोलन किया। उससे भी बढ़कर उन्होंने छुआछूत रूपी अन्धविश्वास के विरोध में आंदोलन चलाया। वीर सावरकर ने पतित पावन मंदिर की स्थापना की जिसमें बिना किसी भेदभाव के ब्राह्मण से लेकर शूद्र सभी को प्रवेश करने की अनुमति थी। सामूहिक भोज का आयोजन किया जिसमें शूद्रों के हाथ से ब्राह्मण भोजन ग्रहण करते थे। दलित बच्चों को जनेऊ धारण करवाने से लेकर गायत्री मंत्र की शिक्षा दी। रत्नागिरि में वीर सावरकर ने छुआछूत रूपी अभिशाप को समाप्त करने के लिए अत्यंत प्रभावशाली आंदोलन किया। इसके साथ साथ जनचेतना के लिए उनका लेखन कार्य अविरल चलता रहा। खेद हैं कि वीर सावरकर के इस चिंतन, श्रम और पुरुषार्थ की अनदेखी कर साम्यवादी इतिहासकार अपनी आदत के मुताबिक उन्हें गद्दार कहकर अपमानित करते हैं। उनकी माफ़ी मांगने की कूटनीति को कायरता के रूप में प्रेषित करते है। धिक्कार है ऐसे पक्षपाती लेखकों को और ऐसे राजनेताओं को जो वीर सावरकर के महान कार्यों की उपेक्षा कर अपने राजनीतिक हितों को साधने में लगे हुए हैं। उन्हें गद्दार कहते है। वीर सावरकर गद्दार नहीं अपितु स्वाभिमानी थे। देशभक्त थे। धर्मयोद्धा थे। अनेक क्रांतिकारियों के मार्गदर्शक थे। कूटनीतिज्ञ थे। प्रबुद्ध लेखक थे। आत्मस्वाभिमानी थे। समाज सुधारक थे।

आईये आज वीर सावरकर की जयंती पर हम लोग यह प्राण करे कि हम भी उनके समान छुआछूत मिटाने, धर्म रक्षा, देश भक्ति के लिए पुरुषार्थ करेंगे। हमारे क्रांतिकारी महान है गद्दार कभी नहीं। गद्दार तो वो है जो उनकी आलोचना करते है।

फरीदाबाद आर्य युवक शिविर

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद हरियाणा के तत्वावधान में विशाल आर्य युवक चरित्र निर्माण शिविर दिनांक 9 जून 15 जून 2025 तक आर्य समाज सेक्टर 28—31, फरीदाबाद में आयोजित किया जा रहा है। इच्छुक युवक सम्पर्क करें—

—वीरेंद्र योगाचार्य, मो. 9350615369

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद दिल्ली
विशाल आर्य युवक चरित्र निर्माण शिविर
समापन समारोह

सानिध्यः डॉ. अमिता चौहान व डॉ. अशोक कुमार चौहान जी

रविवार 8 जून 2025, प्रातः 11.00 से 1.00 बजे तक

स्थानः एमिटी इंटरनेशनल स्कूल सेक्टर 44, नोएडा

आर्य युवकों के भव्य व्यायाम प्रदर्शन—निर्देशन सौरभ गुप्ता

ऋषि लंगर— दोपहर 1.00 बजे, आप सपरिवार सादर आमंत्रित हैं

निवेदकः आनंद चौहान संरक्षक, अनिल आर्य राष्ट्रीय अध्यक्ष, महेन्द्र भाई राष्ट्रीय महासचिव, धर्मपाल आर्य कोषाध्यक्ष

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की बैठक सम्पन्न

देश भर में आर्य कार्यकर्ता सम्मेलन आयोजित किए जाएंगे –स्वामी आर्य वेश
युवाओ को जोड़ने का अभियान चलाएंगे –अनिल आर्य

नई दिल्ली, रविवार 18 मई 2025, आर्य समाज की शिरोमणि संस्था में 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अंतरंग बैठक' मुख्यालय दयानन्द भवन आसिफ़ अली रोड में सम्पन्न हुई जिसमें देश के विभिन्न प्रान्तों से प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। सभा के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष स्वामी आर्य वेश ने कहा कि यह वर्ष आर्य समाज की स्थापना का 150 वर्ष चल रहा है इस वर्ष में सभी को संगठन को मजबूत बनाने के लिए कुछ विशेष कार्य करना होगा। उन्होंने कहा कि आर्य समाज एक आन्दोलन है जिसका देश की आजादी में महत्वपूर्ण योगदान रहा। स्वामी जी ने प्रेरणा दी कि सभी अपने अपने क्षेत्र में जाकर जिला व प्रान्तीय सम्मेलन आयोजित करे और नए लोगों को जोड़ कर संगठन को मजबूत बनाए। आर्य समाज के सिद्धांत व उपलब्धियां बताने के लिए लघु ट्रेक्ट का प्रकाशन करें। आर्य समाज के उद्देश्य आज भी

प्रासंगिक हैं जिन्हें आम आदमी तक पहुंचाने की आवश्यकता है। सभा के उपप्रधान व केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि युवाओं को आकर्षित करने के लिए युवक चरित्र निर्माण शिविरों का आयोजन किया जाएगा साथ ही आर्य समाज, भारतीय संस्कृति से अवगत कराया जाएगा। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वैचारिक क्रांति का शंखनाद किया और लोगों के सोचने की दिशा बदल डाली। सभा का संचालन महा मंत्री प्रो. विठ्ठल राव आर्य ने किया। प्रमुख रूप से भंवर लाल आर्य (जोधपुर), वीरजा नंद आर्य (बेहरोड), आनंद प्रकाश आर्य (हापुड़), शत्रुध्न आर्य (हरिद्वार), गोबिंद सिंह भण्डारी (बागेश्वर), स्वामी आदित्य वेश (रोहतक), स्वामी वेदा नंद (गाजियाबाद), महेन्द्र भाई (दिल्ली), संत कुमार आर्य लुधियाना), ओमप्रकाश आर्य (अमृतसर), सुभाष आपते (महाराष्ट्र), रामानन्द आर्य (पटना), पूर्ण चंद्र आर्य (रांची), बहन पूनम–प्रवेश (रोहतक), राज देव शास्त्री (पलवल), मधुर प्रकाश आर्य, रामकुमार आर्य आदि उपस्थित थे।

क्रान्तिकारी रासबिहारी बोस (25 मई/जन्म–दिवस)

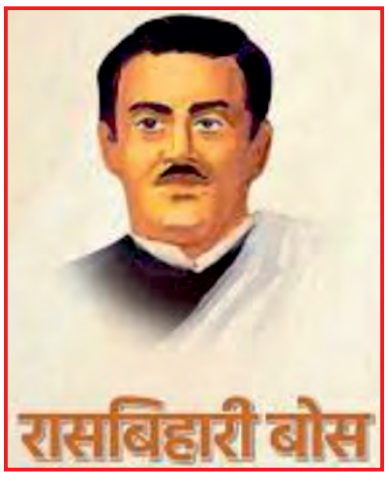

बीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध में प्रत्येक देशवासी के मन में भारत माता की दासता की बेड़ियाँ काटने की उत्कट अभिलाषा जोर मार रही थी। कुछ लोग शान्ति के मार्ग से इन्हें तोड़ना चाहते थे, तो कुछ जैसे को तैसा वाले मार्ग को अपना कर बम–गोली से अंग्रेजों को सदा के लिए सात समुन्दर पार भगाना चाहते थे। ऐसे समय में बंगभूमि ने अनेक सपूतों को जन्म दिया, जिनकी एक ही चाह और एक ही राह थी– भारत माता की पराधीनता से मुक्ति।

25 मई, 1885 को बंगाल के चन्द्रनगर में रासबिहारी बोस का जन्म हुआ। वे बचपन से ही क्रान्तिकारियों के सम्पर्क में आ गये थे। हाईस्कूल उत्तीर्ण करते ही वन विभाग में उनकी नौकरी लग गयी। यहाँ रहकर उन्हें अपने विचारों को क्रियान्वित करने का अच्छा अवसर मिला, चूँकि सघन वनों में बम, गोली का परीक्षण करने पर किसी को शक नहीं होता था। रासबिहारी बोस का सम्पर्क दिल्ली, लाहौर और पटना से लेकर विदेश में स्वाधीनता की अलख जगा रहे क्रान्तिवीरों तक से था। 23 दिसम्बर, 1912 को दिल्ली में वायसराय लार्ड हार्डिंग की शोभा यात्रा निकलने वाली थी। रासबिहारी बोस ने योजना बनाई कि वायसराय की सवारी पर बम फेंककर उसे सदा के लिए समाप्त कर दिया जाये। इससे अंग्रेजी शासन में जहाँ भय पैदा होगा, वहाँ भारतीयों के मन में उत्साह का संचार होगा।

योजनानुसार रासबिहारी बोस तथा बलराज ने चाँदनी चौक से यात्रा गुजरते समय एक मकान की दूसरी मंजिल से बम फेंका; पर दुर्भाग्यवश वायसराय को कुछ चोट ही आयी, वह मरा नहीं। रासबिहारी बोस फरार हो गये। पूरे देश में उनकी तलाश जारी हो गयी। ऐसे में उन्होंने अपने साथियों की सलाह पर विदेश जाकर देशभक्तों को संगठित करने की योजना बनाई। उसी समय विश्वकवि गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर जापान जा रहे थे। वे भी उनके साथ उनके सचिव पी. एन.टैगोर के नाम से जापान चले गये। पर जापान में वे विदेशी नागरिक थे। जापान और अंग्रेजों के समझौते के अनुसार पुलिस उन्हें गिरफ्तार कर भारत भेज सकती थी। अतः कुछ मित्रों के आग्रह पर उन्होंने अपने शरणदाता सोमा दम्पति की 20 वर्षीय बेटी तोसिको से उसके आग्रह पर विवाह कर लिया। इससे उन्हें जापान की नागरिकता मिल गयी। यहाँ तोसिको का त्याग भी अतुलनीय है। उसने रासबिहारी के मानव कवच की भूमिका निभाई। जापान निवास के सात साल पूरे होने पर उन्हें स्वतन्त्र नागरिकता मिल गयी। अब वे कहीं भी जा सकते थे।

उन्होंने इसका लाभ उठाकर दक्षिण एशिया के कई देशों में प्रवास कर वहाँ रह रहे भारतीयों को संगठित कर अस्त्र–शस्त्र भारत के क्रान्तिकारियों के पास भेजे। उस समय द्वितीय विश्व युद्ध की आग भड़क रही थी। रासबिहारी बोस ने भारत की स्वतन्त्रता हेतु इस युद्ध का लाभ उठाने के लिए जापान के साथ आजाद हिन्द की सरकार के सहयोग की घोषणा कर दी। उन्होंने जर्मनी से सुभाष चन्द्र बोस को बुलाकर 'सिंगापुर मार्च' किया तथा 1941 में उन्हें आजाद हिन्द की सरकार का प्रमुख तथा फौज का प्रधान सेनापति घोषित किया। देश की स्वतन्त्रता के लिए विदेशों में अलख जगाते और संघर्ष करते हुए रासबिहारी बोस का शरीर थक गया। उन्हें अनेक रोगों ने घेर लिया था। 21 जनवरी, 1945 को वे भारत माता को स्वतन्त्र देखने की अपूर्ण अभिलाषा लिये हुए ही चिर निद्रा में सो गये।

मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता से भेंट व जीतेन कोही का अभिनन्दन

प्रथम चित्र में केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य एमिटी शिविर का निमंत्रण देते मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता से भेंट, साथ में ओम सपरा, संतोष शास्त्री व वीरेश् आर्य। द्वितीय चित्र में जीतेन कोही का जन्मदिवस पर अभिनन्दन करते हुए अनिल आर्य साथ में महेन्द्र भाई, प्रवीण आर्य व अंजना गुप्ता।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् द्वारा 2020 से 715वां वेबिनार सम्पन्न

'भगवद्गीता में जीवन दर्शन' विषय पर गोष्ठी का आयोजन

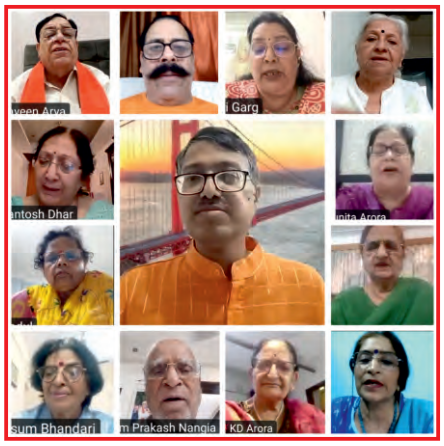

वैदिक विद्वान कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के आई आई एचएस के संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ. रामचंद्र ने कहा कि श्रीमद्भगवद्गीता भारत की सनातन ऋषि परम्परा का प्रतिनिधि ग्रन्थ है। विश्व में यह पहला ग्रंथ है जिसका उपदेश युद्ध की भूमि में दिया गया है और जिसकी जयंती (मार्गशीर्ष शुक्ल एकादशी) मनाई जाती है। कुल अठारह अध्याय और सात सौ श्लोकों से युक्त इस ग्रन्थ रत्न में गागर में सागर की तरह ज्ञान, दर्शन एवं विचार का महासागर समाया हुआ है। भारतीय मनीषा का यह ऐसा अनुपम ज्ञानकोश है जो सीमाओं से संपूर्ण विश्व के कोटि कोटि जनों की ज्ञान, ध्यान, भक्ति एवं कर्म योग की साधना का पथ प्रशस्त करता है। डॉ. रामचन्द्र ने कहा कि जब विषाद ग्रस्त धनुर्धर योद्धा अर्जुन बाण सहित धनुष का विसर्जन करके रथ की गोद में बैठ जाता है। तब श्रीकृष्ण दूसरे अध्याय में पहली बार अपना मुख मंडल खोलते हैं। गीता में जीवन के उन्नयन के लिए द्वितीय अध्याय में स्थितप्रज्ञ बनने का कालजयी संदेश दिया गया है। इन उन्नीस श्लोकों के अध्ययन में विश्व की असंख्य समस्याओं का समाधान छिपा हुआ है। गीता का दर्शन है यज्ञ के अनुष्ठान से सभी पाप नष्ट हो जाते हैं। समत्व योग के पालन से तनाव दूर होकर आन्तरिक शान्ति प्राप्त होती है तथा युक्त आहार, विहार, शयन एवं जागरण से जीवन के सभी दुःख समाप्त हो जाते हैं। मुख्य वक्ता ने 16वें अध्याय के दैवी एवं आसुरी शक्ति के स्वरूप का विस्तृत एवं प्रभावी वर्णन करते हुए आहार, तप, यज्ञ, सुख एवं दान के सात्त्विक, राजस एवं तामस स्वरूप का भी विस्तृत वर्णन किया। उन्होंने कहा कि आज समाज में सभी विषयों में राजस एवं तामस वृत्तियों का व्यवहार बढ़ रहा है और यही संसार के दुःखों का मूल कारण है। यदि भगवद् गीता के जीवन दर्शन के अनुसार व्यक्ति अपने जीवन के प्रत्येक विषय में सात्त्विक भाव को अपनाना प्रारंभ कर दें तो जीवन निश्चल,निश्छल एवं निर्मल हो जाएगा। मुख्य अतिथि आर्य नेत्री रजनी गर्ग ने गीता को जीवन में आत्मसात करने का आह्वान किया। परिषद अध्यक्ष अनिल आर्य ने कुशल संचालन किया व प्रदेश अध्यक्ष प्रवीण आर्य ने धन्यवाद ज्ञापन किया। गायिका प्रवीना ठक्कर, कौशल्या अरोड़ा,जनक अरोड़ा, कमला हंस, रविन्द्र गुप्ता, सुनीता अरोड़ा, मृदुल अग्रवाल, शोभा बत्रा, संतोष धर आदि के मधुर भजन हुए।

'स्वाध्याय की महिमा' विषय पर गोष्ठी सम्पन्न

स्वाध्याय से मनुष्य का कायाकल्प संभव –साध्वी रमा चावला

सोमवार 12 मई 2025, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में 'स्वाध्याय की महिमा' विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह कोरोना काल से 713 वाँ वेबिनार था। वैदिक विदुषी रमा चावला ने कहा कि स्वाध्याय की महिमा अपरंपार है। स्वाध्याय की शक्ति मनुष्य का कायाकल्प कर देती है। स्वाध्याय से हमारा तात्पर्य सद्ग्रंथ एवं आर्ष ग्रंथ पढ़ना उदाहरण के तौर पर वेद सत्यार्थ प्रकाश, उपनिषदों का पढ़ना वास्तव में सद्ग्रंथ जीवन के प्रेरक, सुधारक निर्माता हैं। स्वाध्याय शील व्यक्ति बुराइयों, चिंताओ एवं रोगों से मुक्त हो जाता है वो स्वयं का ही चिकित्सक बन जाता है। स्वाध्याय में अद्भुत शक्ति होती है। स्वाध्याय मनुष्य के एकान्त का उत्तम साथी है। स्वाध्याय करने से बुद्धि जागृति होती है। मनुष्य का मन चित्त शांत होता है। स्वाध्याय और सत्संग का गहरा संबंध है दोनो करने से संतुष्टि एवं आनंद मिलता है। विडंबना यह है कि आज कल स्वाध्याय की प्रवृत्ति कम हो गई है और जो कि बहुत चिन्ता का विषय है। देखो मनुष्य सब कुछ छोड़ जाएगा लेकिन अगर उसने स्वाध्याय करके श्रेष्ठ ज्ञान प्राप्त कर लिया है,तो उसकी धार्मिक प्रवृत्ति बनी रहेगी जो उसको उसके उद्देश्य पूरा करने में मदद करेगी। उपनिषदों का भी सन्देश है स्वाध्याय नमः। स्वाध्याय करने से मनुष्य परमात्मा की ओर खिंचा चला जाता है। स्वाध्याय और पुरुषार्थ एक दूसरे के पूर्वानुगामी हैं कि स्वाध्याय करने से मनुष्य कर्म ज्ञानपुर्वक करना शुरू कर देता है तब उसका आत्म ज्ञान जगने लगता है। स्वाध्याय की प्रक्रिया में पहले श्रवन, मनन, चिंतन, ग्रहण करके ही आत्मसात करना चाहिए। स्वाध्याय बार बार करने से तथा आत्म चिन्तन करने से मनुष्य का ज्ञान पक्का होता जायेगा। तब व्यक्ति उसको अपने जीवन में अमल करेगा तभी उसका जीवन सुधरेगा। अंत में जितना जितना उसका गहरा स्वाध्याय होता है उतना ही वह जीवन में धीरे धीरे करके मोक्ष की ओर बढ़ता जाएगा।मनुष्य कर्म ज्ञानपुर्वक करना शुरू कर देता है। तब उसका आत्म ज्ञान जगने लगता है। मुख्य अतिथि चंद्रकांता गेरा व अध्यक्ष आर्य नेत्री पूजा सलूजा ने आर्ष ग्रंथों के पढने पर जोर दिया। परिषद अध्यक्ष अनिल आर्य ने कुशल संचालन किया व प्रवीण आर्य ने धन्यवाद ज्ञापन किया। गायिका कौशल्या अरोड़ा ,जनक अरोड़ा, कमला हंस, सुनीता अरोड़ा, रविन्द्र गुप्ता आदि के मधुर भजन हुए।

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिटर्स**, 2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 **मो.**: 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970